घर के पिछवाडे में मुर्गीपालन

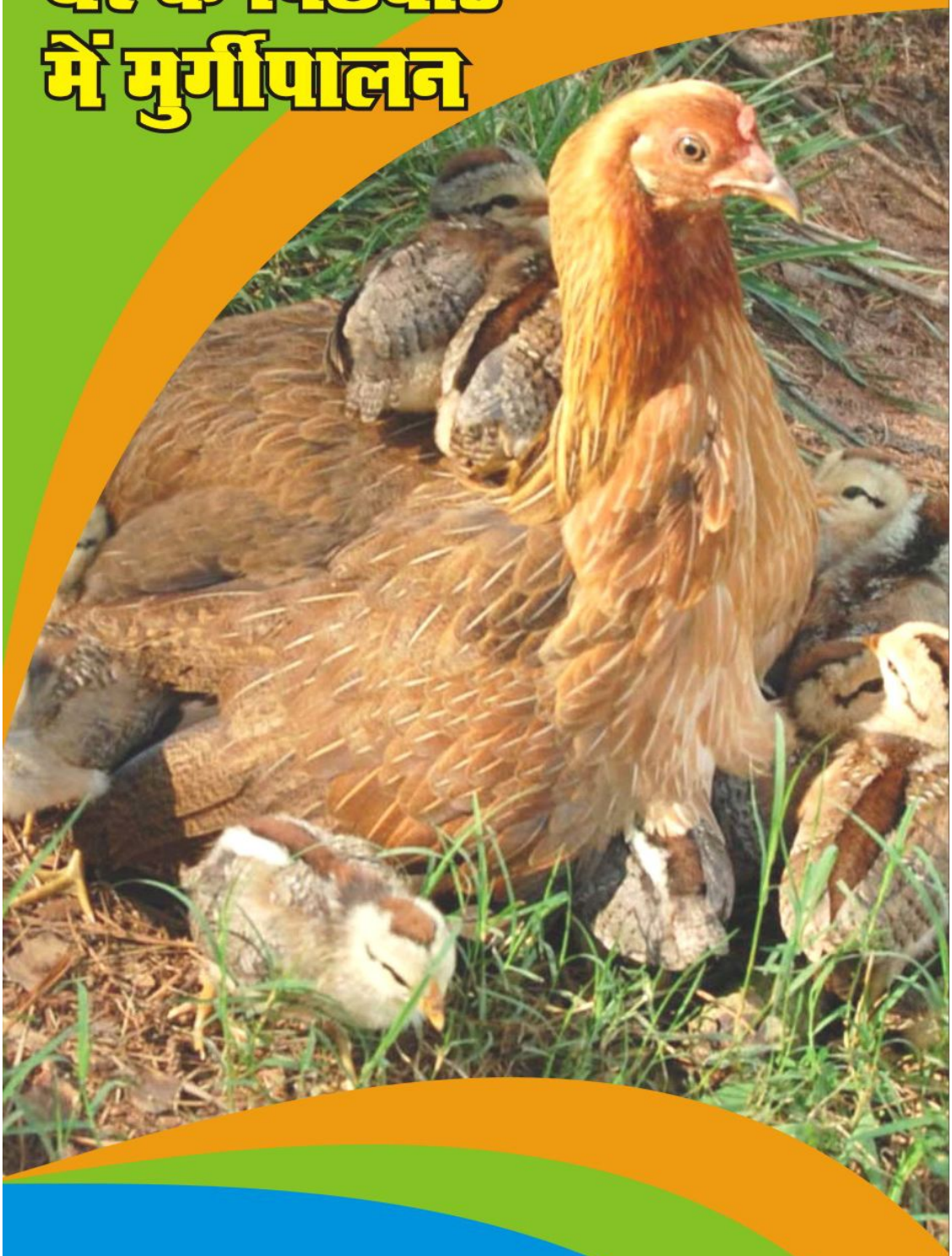

भाकृअनुप
ICAR

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र
सेवनियां, जिला – सीहोर (म.प्र.)

CRDE

मध्य प्रदेश एक कृषि प्रधान राज्य है, जहॉ पर 80 प्रतिशत जनता की जीविका का स्त्रोत मुख्यतः कृषि एवं पशुपालन है। वर्तमान समय कृषिगत भूमि का क्षेत्रफल कम हो रहा है, जिसे दृष्टिगत रखते हुए कृषि के साथ अन्य व्यवसाय को अपनाने की आवश्यकता है, जिसमें मुर्गी पालन एक बेहतर विकल्प है, जिसे भूमिहीन कृषक भी अपनाकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मुर्गीपालन की अपनी निम्न विशेषताएं हैं :–

- अल्प अवधि में संतति उत्पादन क्षमता।
- अतिशीघ्र शारीरिक वृद्धि।
- आहार उत्पादन परिवर्तन क्षमता।

उपरोक्त विशेषताओं के कारण ग्रामीण व शहरी छोटे मुर्गी पालकों को अल्प अवधि में स्वरोजगार के अवसर सुलभ कराने का विकल्प है। घर के पिछवाड़े 10 – 20 मुर्गियां रख सकते हैं। मुर्गीपालन ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्रों में आसानी से प्राकृतिक भोजन के आधार पर किया जा सकता है। जिसमें गिरे हुए दाने, कीट, केंचुए, रसोई का अपशिष्ट व हरी घास आदि खिलाकर मुर्गीपालन किया जा सकता है। ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्रों के लोगों की आर्थिक व भोजन की पौष्टिकता बढाने के लिए एक अच्छा विकल्प है मुर्गीपालन।

घर के पिछवाडे में मुर्गीपालन के लिए पशुपालक ग्रामप्रिया, वनराजा, रोड आइलेंड रेड व कडकनाथ आदि नस्लें पाल सकते हैं। उन्नत नस्लें पालने से अण्डा व मांस उत्पादन अधिक प्राप्त होता है। ग्रामप्रिया नस्ल अधिक अण्डा व मांस उत्पादन देती है तथा दिखने में देशी मुर्गी जैसी दिखती है। ग्रामप्रिया के मुर्गे तन्दूरी डिस बनाने के लिए उपयुक्त होती है। इस नस्ल में बीमारियों से लडने की अधिक क्षमता होती है, जिसके कारण घर के पिछवाडे में मुर्गीपालन के लिए उपयुक्त है। इस नस्ल का भार मध्यम होने के कारण यह जंगली जानवरों से भी आसानी से बच जाती है।

इस नस्ल के चूजों को 6 सप्ताह नर्सरी (ब्रूडर) में रखना पडता है, इसके बाद खुले छोड सकते हैं।

ग्रामप्रिया नस्ल के मुख्य लक्षण :–

1 – पंख विभिन्न रंग के होते हैं।

2 – मध्यम भार की होती है।

3 – (कल्गी) सनेकस बडे होते हैं।

4 – अधिक अण्डा (200 – 230) उत्पादन।

5 – भूरे रंग की सेल का अण्डा उत्पादन।

6 – जंगली जानवरों से कम खतरा।

ब्रूडिंग :– मुर्गीपालन के लिए 6 सप्ताह तक ब्रूडिंग अति आवश्यक है।

ब्रूडर :– साफ व स्वच्छ धान की पुआल, मुंगफली का छिलका, लकड़ी का बुरादा आदि का 2 – 3 इंच मोटाई में बिछावन (लीटर) बिछा देनी चाहिए तथा तापक्रम बनाये रखने के लिए 2 वाट/चूजा, 4 – 6 सप्ताह तक बल्ब या गैसबत्ती जलाकर रखना चाहिए। यदि वातावरण का तापमान अधिक होता है, तो चूजे तापमान स्रोत से दूर चले जाते हैं और कम होता है तो चूजें तापमान स्रोत के पास आ जाते हैं। सही तापमान होने पर चूजे आसपास घूमते रहते है।

आहार प्रबंधनः– चूजों को संतुलित आहार में दाने के साथ खनिज मिश्रण, विटामिन्स, एण्टीमाइक्रोबीयल व एण्टीकोक्सीडियल की आवश्यकता होती है। दाने के लिए उपलब्ध स्थानीय सामग्री का उपयोग करना चाहिए जैसे – बाजरा, ज्वार, कोरिया, रागी, मक्का, चावल, कुसुम की खली, मूंगफली की खली व तिल की खली आदि। जिसमें प्रति किग्रा. दाने से 2400 किलो कैलोरी ऊर्जा व 18 प्रतिशत पाच्य प्रोटीन उपलब्ध हो सके।

स्वास्थ्य प्रबंधनः– ग्रामप्रिया नस्ल को सामान्य बीमारियों जैसे – रानीखेत, आई. बी. डी., फाऊल पोक्स आदि बीमारियों की सुरक्षा के

टीकाकरण विवरण

आयु	टीका का नाम	स्ट्रेन	मात्रा	रूट
5वें दिन	रानीखेत बीमारी	लसोटा	एक बूँद	आंख से
14वें दिन	आई. बी. डी.	गेओरजिया	एक बूँद	मुँह से
21वें दिन	पोक्स (माता)	फाऊल पोक्स	0.2मिली.	सबकट इंजेक्शन
28वें दिन	रानीखेत	लसोटा	एक बूँद	ऑख से
9 सप्ताह	रानीखेत*	आर. 2 बी.	0.50 मिली	सबकट इंजेक्शन
12 सप्ताह	पोक्स (माता)*	फाऊल पोक्स	0.20 मिली	सबकट इंजेक्शन

*दोनो टीकाकारण हर 6 महीने के अन्तराल पर लगवाते रहना चाहिए।

लिए टीकाकरण की आवश्यकता होती है।

घर के पिछवाडे में आवास प्रबन्धन :– 6 से 7 सप्ताह में चूजों का भार लगभग 400 – 500 ग्राम हो जाता है। उसके बाद उनको नर्सरी से निकालकर घर के पिछवाडे में खुला छोड देते है। मुर्गीपालक 10 – 20 मुर्गियॉ क्षेत्र व प्राकृतिक भोजन की उपलब्धता अनुसार रख सकते हैं। दिन में मुर्गियों को खुला छोड दे तथा रात्रि के समय में मुर्गीखाने में रखें। मुर्गीखाने से मुर्गियां छोड़ने से पहले स्वच्छ जल अवश्य दें।

आहार :– मुर्गियों को खुला छोड़ने से मुर्गियॉ अपना भोजन उपलब्ध घास, सब्जी व कीटो से करती है। इससे मुर्गियॉ प्रोटीन की पूर्ति तो कर लेती हैं, लेकिन ऊर्जा की पूर्ति नही हो तो घर में उपलब्ध दाने जैसे बाजरा, मक्का, ज्वार, चावल, रागी आदि देना चाहिए। अण्डों को टूटने से बचाने के लिए कैल्शियम के कंकड 3 – 4 ग्राम प्रति पक्षी प्रतिदिन देना चाहिए। मुर्गी को अलग से संतुलित आहार देकर मांस के लिए सघन पद्धति से पालना चाहिए।

स्वास्थ्य प्रबन्धन :– मुर्गियों में स्वास्थ्य प्रबंधन का विशेष ध्यान रखना चाहिए, इसलिए समय–समय पर टीकाकरण करवाना चाहिए तथा डिवर्मिंग के लिए हर 4 महीने पर कृमिनाशक दवा पिलानी चाहिए।

इस प्रकार किसान भाई कम लागत से घर के पिछवाडे में

ग्रामप्रिया नस्ल की जानकारी

क्रम	आर्थिक गुण	जानकारी
1	**शारीरिक भार**	
	06 सप्ताह पर	400 – 500 ग्राम
	यौवन अवस्था पर	1600 – 1800 ग्राम
2	**अण्डे का वजन**	
	28 सप्ताह में	52 – 53 ग्राम
	40 सप्ताह में	57 – 58 ग्राम
	प्रथम अण्डा देने की अवधि	160 – 165 दिन
	अण्डा उत्पादन (1.5 वर्ष की उम्र)	200 – 230 अण्डे
	जीवित रहने की प्रतिशता (06 सप्ताह तक)	99 प्रतिशत

मुर्गीपालन करके अपने भोजन में पोषक तत्वों का समावेश कर कुपोषण से बच सकते हैं, तथा अपनी आर्थिक स्थिति भी सुधार सकते हैं।

-:प्रकाशक:-

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियां, जिला-सीहोर (म.प्र.)

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियां, जिला-सीहोर (म.प्र.)

फोन - 07561-281834, ई-मेल : crdekvksehore@gmail.com